VAC 1: पंचतन्त्रम् में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ

Credit distribution, Eligibility and Pre-requisites of the Course

Course Title & code	Credits	Creditdistribution of the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of thecourse
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
पंचतन्त्रम् में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ	02	1	0	1	Pass in Class 12th	NIL

Learning Objectives:

This value-added paper aims to:

- विद्यार्थी को पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित कराना।
- विद्यार्थी को पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त कराना।
- विद्यार्थी को पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओं से परिचित कराना।
- पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान कराना।

LearningOutcomes:

By the end of the course, students will be able to:

- विद्यार्थी पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित होगें।
- विद्यार्थी पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त करेगें।
- विद्यार्थी पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओं से परिचित होगें।
- पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान करेगें।

पाठ्यक्रम- पञ्चतन्त्रम् में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ

इकाई 01–कथासाहित्य की परम्परा, आचार्य विष्णु शर्मा का परिचय एवं पञ्चतन्त्रम् के पॉच तन्त्रों का परिचय।

इकाई 02–पञ्चतन्त्रम्–मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाश और अपरीक्षितकारक में नीतिपरक शिक्षाओं की वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता।

इकाई 03– मित्र सम्प्राप्ति से दो कथाएँ– साधु और चूहा एवं ब्राह्मणी और तिल के बीज के माध्यम से पञ्चतन्त्रम् का महत्त्व।

Practical component (if any)

- समूह चर्चाओं और परियोजनाओं के माध्यम से पञ्चतन्त्रम् में वर्णित नीतिपरक शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता का सर्वेक्षण।
- पञ्चतन्त्रम् की कथाओं के माध्यम से जीवन के नैतिक और व्यवहारिक मूल्यों के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए कार्यशालाएं या व्याख्यान या प्रतियोगिता का आयोजित किया जायेगा।
- छात्र पञ्चतन्त्रम् की कथाओं के अध्ययन से परियोजना के रूप में नीतिपरक शिक्षाओं एवं मूल्यों पर अपनी आख्या प्रस्तुत करेगें।
- कथा में वर्णित सूक्तियों का पोस्टर, स्लोगन के रूप में प्रचार–प्रसार करेगें अथवा ''पंचतंत्र की कथाएँ एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है जो आज भी प्रासंगिक है'' पर निबन्ध लिखेगें।
- प्रशिक्षक द्वारा तय की गई कोई भी अतिरिक्त गतिविधि।

Essential/recommended readings

- मित्रभेद (मित्रों में मनमुटाव एवं अलगाव), मित्रसंप्राप्ति (मित्र प्राप्ति एवं उसके लाभ), सन्धि–विग्रह/काकोलूकियम् (कौवे एवं उल्लूओं की कथा), लब्ध प्रणाश (मृत्यु या विनाश के आने पर, यदि जान पर आ बने तो क्या करें ?), अपरीक्षित कारक (जिसको परखा नहीं गया हो उसे करने से पहले सावधान रहे, हड़बड़ी में कदम न उठायें), मनोविज्ञान, व्यवहारिकता तथा राजकाज के सिद्धांतों से परिचित कराती तथा साथ ही साथ एक सीख देने की कोशिश करती है।
- संस्कृतवाङ्मय की नीतिकथाओं में पंचतंत्र का पहला स्थान माना जाता है। आज विश्व की 50 से भी अधिक भाषाओं में इनका अनुवाद प्रकाशित है।
- संस्कृतसाहित्य पद्य और गद्य में परस्पर सम्बन्धित पशु दन्तकथाओं का एक प्राचीन भारतीय संग्रह है।

Suggested Reading:

1. पंचतंत्र–आचार्य श्री विष्णु शर्मा, युवराज प्रकाशन, आगरा।
2. पंचतंत्र संस्करण–तन्त्राख्यायिका, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
3. पंचतंत्र संस्करण–सरल पंचतंत्र, युवराज प्रकाशन, आगरा।
4. पंचतंत्र संस्करण–दक्षिणी पंचतंत्र, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
5. पंचतंत्र संस्करण–हितोपदेश, युवराज प्रकाशन, आगरा।
6. गुणाढ्य की बृहत्कथा पर आश्रित–क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथा मंजरी।
7. वाल्मीकि रामायण में नीतितत्त्व–योगीन्द्र गुप्ता,अनुराधा प्रकाशन, मेरठ।
8. वेदामृतम् नीतिशिक्षा–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।

VAC 2: VAC- संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन

Credit distribution, Eligibility and Pre-requisites of the Course

Course Title & code	Credits	Creditdistribution ofthecourse			Eligibility criteria	Pre-requisite of thecourse
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
VAC- संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन	02	1	0	1	Pass in Class 12th	NIL

Learning Objectives:

This value-added paper aims to:

- विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा बनाये तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करें।
- पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त करें।
- प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करें।

LearningOutcomes:

By the end of the course, students will be able to:

- विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा मानेंगे तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करने के महत्त्व को समझेंगे।
- पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी।

पाठ्यक्रम- संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन

इकाई 01—पर्यावरण विज्ञान : परिभाषा, क्षेत्र एवं वर्तमानकालिक चुनौतियाँ—
आधुनिक काल में पर्यावरण हेतु चुनौतियाँ एवं संकट : भूमण्डलीय ऊष्मीकरण, जलवायु परिवर्तन, ओजोन क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण में विस्फोटक वृद्धि, भूगर्भीय जलस्तर की न्यूनता, नदियों का प्रदूषण, व्यापक निर्वनीकरण, प्राकृतिक आपदाएँ यथा : बाढ़, सूखा एवं भूकम्प।

इकाई 02— संस्कृत साहित्य में प्रकृति के संरक्षण हेतु, वृक्षारोपण, उनका संरक्षण, जल संरक्षण की विधियों पर संक्षेप में सर्वेक्षण।
संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण विषयक प्रमुख विचार—ऋग्वेद के नदी सूक्त में

नदियों के संरक्षण की कामना।
यजुर्वेद में पंचतत्त्वों की शान्ति तथा पर्यावरण की अनुकूलता विषयक विचार।

इकाई 03–पर्यावरण से आच्छादित ब्रह्माण्ड के पाँच मूल तत्त्व : पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश।
अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में पृथिवी संबंधी विचार।
अथर्ववेद के अरण्यानी सूक्त में वनस्पतियाँ के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना।
वृक्षायुर्वेद में वर्णित प्रकृति का शास्त्रीय विधि से उपयोग। यज्ञ के द्वारा प्राकृतिक चक्र का संतुलन।

Practical component (if any)

- समूह चर्चाओं और परियोजनाओं के माध्यम से पर्यावरण क्षेत्र एवं वर्तमानकालिक चुनौतियों का विचार।
- पर्यावरण विज्ञान के माध्यम से जागरूकता फैलाने के लिए कार्यशालाएं या व्याख्यान का आयोजित करना, छात्रों को कर्तव्यों के बारे में जागरूकता का आकलन करने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन करना।
- संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चिंतन का व्यावहारिक पक्ष, पर्यावरण के प्रति सम्मान, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना, वर्तमान में एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराना।
- प्रशिक्षक द्वारा तय की गई कोई भी अतिरिक्त गतिविधि।

Essential/recommended readings

- वेदों में पर्यावरण।
- संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण।
- पुराणों में पर्यावरण संरक्षण।

Suggested Reading:

1. वेदों में विज्ञान, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, भदोही।
2. अथर्ववेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
3. ऋग्वेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
4. यजुर्वेद संहिता–स्वामी दयानन्द,वैदिक मन्त्रालय अजमेर।
5. आर्य, कमलनारायण, वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण एवं प्रदूषण, स्वामी दिव्यानन्द प्रकाशन, रायपुर, मध्य प्रदेश, 1998
6. महर्षि वाल्मीकिकृत– श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गोरखपुर गीता प्रेस।
7. महर्षि व्यासकृत– महाभारत– सम्पादक मण्डल वी0एस0 सूकथङकर, एडगर्टन, रघुवीर आदि पुणे, भाण्डाकर प्राच्य विद्यामंदिर 1933–1959।
8. कालिदास ग्रन्थावली– आचार्य पं0 सीताराम शास्त्री, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
9. पशुपक्षिविचिन्तनम्– डॉ0 हरिनारायण दीक्षित– ईस्टर्न बुक लिंक्स प्रकाशन।